स्वर्गीय मुकुट (The Heavenly Crowns)
हम हमेशा से जानते हैं कि मुकुट (Crown) का संबंध राजा, राज्य और अधिकार से होता है। लेकिन बाइबल में ऐसे मुकुटों का भी उल्लेख है जो सोने, चाँदी या बहुमूल्य रत्नों से बने हुए नहीं हैं और न ही वे सांसारिक सामर्थ्य या शासन का प्रतीक हैं।

ये स्वर्गीय राज्य के मुकुट हैं, जो परमेश्वर की महिमा, सामर्थ्य और अधिकार का प्रतिनिधित्व करते हैं। परमेश्वर अपने विश्वासयोग्य लोगों को उनके भक्ति-भरे जीवन, धार्मिकता, विश्वास, आज्ञाकारिता और उसके वचन के प्रति निष्ठा के सम्मान में ये मुकुट प्रदान करता है।

अंततः, हम प्रभु यीशु मसीह के राज्य के नागरिक हैं, जो "राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु" हैं (प्रकाशितवाक्य 19:16)। इसलिए हमारा लक्ष्य सांसारिक मुकुट नहीं, बल्कि वे स्वर्गीय मुकुट प्राप्त करना है जो प्रभु

□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□

## □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ (Earthly and Priestly Crowns)

□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□, □□□□□ □□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ (□□□□□□ □□□□□□) □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□, □□□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□, □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□, □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ (□□□□ 34 □□□□□□□□□) □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ (2 □□□□□ 12:30)□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□

राजाओं के मुकुटों के अतिरिक्त, बाइबल याजकीय मुकुट का भी उल्लेख करती है। महायाजक अपनी पगड़ी पर शुद्ध सोने की एक पवित्र पट्टी पहनता था, जिसे “पवित्र मुकुट” (नेज़र) कहा जाता था। इस स्वर्ण पट्टी पर “यहोवा के लिये पवित्र" अंकित था (निर्गमन 29:6; लैव्यव्यवस्था 8:9)। यह मुकुट किसी राजनीतिक शक्ति का नहीं, बल्कि पवित्रता, परमेश्वर के लिए समर्पण और उसके लोगों की ओर से उसकी सेवा करने के पवित्र बुलावे का प्रतीक था। यह महायाजक और इस्राएलियों दोनों को स्मरण दिलाता था कि महायाजक परमेश्वर की उपस्थिति में लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए अलग किया गया है।

ये सांसारिक और याजकीय मुकुट आगे चलकर स्वर्गीय मुकुटों की ओर संकेत करते हैं, जिनका वादा प्रभु यीशु मसीह ने अपने विश्वासयोग्य लोगों से किया है। जहाँ सांसारिक मुकुट अस्थायी अधिकार, सम्मान और महिमा का प्रतीक हैं, वहीं स्वर्गीय मुकुट परमेश्वर के अनन्त राज्य में अनन्त जीवन,

विश्वासयोग्यता, विजय, सम्मान और दिव्य प्रतिफल का प्रतीक हैं। ये मुकुट उन लोगों को दिए जाएँगे जो विश्वास में दृढ़ बने रहते हैं, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और अंत तक प्रभु यीशु के प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं।

बाइबल में उल्लिखित मुकुटों की सूची

(List of Crowns Mentioned in the Bible)

सांसारिक एवं प्रतीकात्मक मुकुट (Earthly and Symbolic Crowns)
1. महिमा और आदर का मुकुट — इब्रानियों 2:7; भजन संहिता 8:5
2. प्रेम और करुणा का मुकुट — भजन संहिता 103:4
3. तेजस्वी (चमकता हुआ) मुकुट — भजन संहिता 132:18
4. अनुग्रह और शोभा का मुकुट — नीतिवचन 4:9
5. ज्ञान का मुकुट — नीतिवचन 14:18
6. धन-संपत्ति का मुकुट — नीतिवचन 14:24
7. श्वेत केश (बुढ़ापे) का महिमा का मुकुट — नीतिवचन 16:31

8. [illegible] — [illegible] **17:6**
9. [illegible] — [illegible] **28:5**
10. [illegible] — [illegible] **16:12**

---

## [illegible] (Heavenly Crowns – Eternal Rewards for Believers)

1. [illegible] — **1** [illegible] **9:25**
2. [illegible] — **2** [illegible] **2:5**
3. [illegible] — **2** [illegible] **4:8**
4. [illegible] — [illegible] **1:12;** [illegible] **2:10**
5. [illegible] [illegible] — **1** [illegible] **5:4**

    1. *[illegible]*

    [illegible] (Crown of Glory) [illegible] [illegible] [illegible]

समाप्त नहीं होती। यह एक विशेष प्रतिफल है जिसे प्रभु यीशु मसीह, जो प्रधान चरवाहा (Chief Shepherd) हैं, उन लोगों को देंगे जो विश्वासयोग्यता के साथ उनकी भेड़ों (कलीसिया) की अगुवाई, देखभाल और चरवाही करते हैं।

प्रेरित पतरस कलीसिया के प्राचीनों (Elders) और आत्मिक अगुवों को प्रोत्साहित करते हैं कि वे परमेश्वर की भेड़ों की चरवाही स्वेच्छा से, उत्साहपूर्वक और एक आदर्श जीवन जीते हुए करें। वे लालच, स्वार्थ या प्रभुत्व की भावना से सेवा न करें, बल्कि नम्रता और प्रेम से दूसरों की अगुवाई करें। पतरस उन्हें आश्वासन देते हैं कि उनकी विश्वासयोग्य सेवा व्यर्थ नहीं जाएगी। जब प्रभु यीशु मसीह, जो प्रधान चरवाहा हैं, पुनः आएँगे, तब वे उन्हें “महिमा का वह मुकुट देंगे जो कभी मुरझाने वाला नहीं है।“

यद्यपि यह प्रतिज्ञा विशेष रूप से कलीसिया के अगुवों, पास्टरों और प्राचीनों के लिए दी गई है, फिर भी इसका सिद्धांत उन सभी विश्वासियों पर भी लागू होता है जो दूसरों को परमेश्वर के वचन

में सिखाते हैं, उनका आत्मिक मार्गदर्शन करते हैं, उनका उत्साह बढ़ाते हैं और प्रेमपूर्वक उनकी देखभाल करते हैं।

मुख्य बाइबल पद

1 पतरस 5:2–4 (NIV)

•“परमेश्वर के उस झुंड की चरवाही करो जो तुम्हारी देखरेख में है। यह काम बाध्यता से नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार स्वेच्छा से करो; बेईमानी के लाभ के लिए नहीं, बल्कि उत्साह से सेवा करो। जो तुम्हें सौंपे गए हैं उन पर प्रभुता न चलाओ, बल्कि झुंड के लिए आदर्श बनो। और जब प्रधान चरवाहा प्रकट होगा, तब तुम्हें महिमा का वह मुकुट मिलेगा जो कभी मुरझाएगा नहीं।“
यह मुकुट हमें स्मरण कराता है कि परमेश्वर विश्वासयोग्य अगुवाई, नम्र सेवा और चरवाहे जैसे हृदय को अत्यंत मूल्यवान मानते हैं। जो लोग मसीह के लोगों की प्रेमपूर्वक देखभाल करते हैं, वे एक ऐसा अनन्त प्रतिफल प्राप्त करेंगे जो संसार के किसी भी सम्मान या पुरस्कार से कहीं बढ़कर है।

यीशु मसीह – महिमा और आदर से मुकुट पहनाया गया
बाइबल में “महिमा और आदर का मुकुट” वाक्यांश सबसे पहले प्रभु यीशु मसीह के लिए प्रयोग किया गया है। उन्होंने समस्त मानवजाति के उद्धार के लिए स्वेच्छा से दुःख उठाया, क्रूस पर मृत्यु सही और पुनर्जीवित हुए। उनके इस महान कार्य के कारण परमेश्वर ने उन्हें महिमा और आदर का मुकुट पहनाया।

इब्रानियों 2:9 (NIV)

•“परन्तु हम यीशु को देखते हैं, जिन्हें थोड़े समय के लिए स्वर्गदूतों से कुछ कम बनाया गया था, और अब मृत्यु का दुःख सहने के कारण वे महिमा और आदर का मुकुट पहने हुए हैं, ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से वे हर एक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चखें।“
मानवजाति – महिमा और आदर का मुकुट
भजन संहिता में दाऊद यह बताता है कि परमेश्वर ने मनुष्य को विशेष सम्मान और गरिमा प्रदान की है। उसने मनुष्य को स्वर्गदूतों से थोड़ा ही कम बनाया और अपनी सृष्टि पर अधिकार और प्रबंधन का उत्तरदायित्व सौंपा। यह परमेश्वर की मूल

□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□

□□□ □□□□□□ 8:4–5 (NIV)

- “□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□, □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□? □□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□“

□□□ (Application)

□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□, □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□, □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□, □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□

1. ***<u>□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ (The Crown of Love and Compassion)</u>***

प्रेम और करुणा का मुकुट का उल्लेख भजन संहिता 103:4 में मिलता है, जहाँ राजा दाऊद परमेश्वर की महान भलाई, दया और अटल प्रेम के लिए उसकी स्तुति करता है। यह मुकुट सोने या बहुमूल्य रत्नों से बना कोई वास्तविक मुकुट नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर के अटल प्रेम, कोमल करुणा, अनुग्रह, सुरक्षा और सम्मान का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि परमेश्वर अपने लोगों को केवल पाप और विनाश से छुड़ाता ही नहीं, बल्कि अपने प्रेम और दया से उन्हें घेर भी लेता है।

दाऊद भजन 103 में परमेश्वर के अनेक उपकारों का वर्णन करता है—वह हमारे सभी अधर्मों को क्षमा करता है, हमारे रोगों को चंगा करता है, हमारे प्राण को विनाश से छुड़ाता है और हमें प्रेम तथा करुणा का मुकुट पहनाता है। यहाँ मुकुट का अर्थ किसी भौतिक वस्तु से नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर के वाचागत प्रेम (Covenant Love) और उसकी अनन्त दया का प्रतीक है। यह हमें स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर अपने बच्चों की रक्षा करता है, उनका आदर करता

है और जीवनभर अपनी विश्वासयोग्यता के साथ उनकी देखभाल करता है।

भजन संहिता 103:4 (NIV) कहता है, “वह तेरे प्राण को गड्ढे से छुड़ाता है और तुझे प्रेम और करुणा का मुकुट पहनाता है।“ यह पद स्पष्ट करता है कि परमेश्वर स्वयं अपने लोगों को यह मुकुट पहनाता है। यह उसकी कृपा का उपहार है, जो यह दर्शाता है कि उसका प्रेम हमारी योग्यता पर नहीं, बल्कि उसके पवित्र स्वभाव, अनुग्रह और विश्वासयोग्यता पर आधारित है।

नए नियम में भी विश्वासियों को परमेश्वर के इसी स्वभाव को अपने जीवन में धारण करने की शिक्षा दी गई है। कुलुस्सियों 3:12 में प्रेरित पौलुस लिखते हैं कि परमेश्वर के चुने हुए, पवित्र और प्रिय लोगों के रूप में हमें करुणा, दया, नम्रता, कोमलता और धैर्य को धारण करना चाहिए। इसका अर्थ है कि जिस प्रकार परमेश्वर ने हम पर प्रेम और करुणा दिखाई है, उसी प्रकार हमें भी दूसरों के प्रति प्रेम, दया और क्षमा का व्यवहार करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, नीतिवचन 14:31 हमें सिखाता है कि जो व्यक्ति गरीब और ज़रूरतमंदों पर दया करता है, वह वास्तव में परमेश्वर का आदर करता है। जब हम दीन-दुखियों, असहायों और आवश्यकता में पड़े लोगों के प्रति करुणा दिखाते हैं, तब हम अपने स्वर्गीय पिता के करुणामय स्वभाव को संसार के सामने प्रकट करते हैं।

प्रेम और करुणा का मुकुट हमें यह सिखाता है कि परमेश्वर का प्रेम केवल हमें बचाने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह हमारे जीवन को बदलता भी है। वह हमें अपनी दया से घेरता है और हमें बुलाता है कि हम भी उसके प्रेम और करुणा को अपने व्यवहार, सेवा, क्षमा और दयालुता के द्वारा दूसरों तक पहुँचाएँ। यद्यपि यह मुकुट पाँच स्वर्गीय प्रतिफल मुकुटों में से एक नहीं माना जाता, फिर भी यह परमेश्वर के उस सम्मान, अनुग्रह और असीम प्रेम का सुंदर चित्र है जो वह अपने लोगों पर उण्डेलता है। यह प्रत्येक विश्वासी को आश्वस्त करता है कि वह परमेश्वर द्वारा गहराई से प्रेम किया गया

□□, □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□

## 2. □□□□□□□ □□□□□ (The Resplendent Crown / The Shining Crown)

□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ 132:18 □□□ □□□□□ □□, □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□□, □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□, □□□□ □□□□□ □□□□□, □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□

□□ □□ □□□ “□□□□□” □□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ “□□□□□” (Nezer) □□, □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□

अपनी चमक और मूल्य खो देते हैं, परन्तु यह मुकुट सदैव तेजस्वी बना रहता है क्योंकि इसे स्वयं परमेश्वर स्थापित करता है और बनाए रखता है। यह उसके आशीष, विश्वासयोग्यता और अपने चुने हुए राजा के साथ उसकी अनन्त वाचा का दृश्यमान चिन्ह है।

मुख्य बाइबल पद

भजन संहिता 132:18 (NIV)

•“मैं उसके शत्रुओं को लज्जा का वस्त्र पहनाऊँगा, परन्तु उसके सिर पर उसका
मुकुट तेजस्विता के साथ चमकेगा।“

यह पद परमेश्वर के शत्रुओं की लज्जा और उसके अभिषिक्त राजा के सम्मान के बीच एक स्पष्ट अंतर को दर्शाता है। जो लोग परमेश्वर की योजनाओं का विरोध करते हैं, वे अन्त में लज्जित होंगे; परन्तु जिस राजा को परमेश्वर ने चुना है, वह महिमा के साथ राज्य करेगा और उसका मुकुट सदैव चमकता रहेगा। यद्यपि इसका तत्काल संदर्भ दाऊद के वंश के राजा से है,

फिर भी अधिकांश मसीही विद्वान मानते हैं कि इसकी पूर्ण पूर्ति प्रभु यीशु मसीह, अर्थात् दाऊद के पुत्र और अनन्त राजा में होती है।

तेजस्वी मुकुट विश्वासियों को यह भी स्मरण दिलाता है कि सच्चा सम्मान और महिमा संसार से नहीं, बल्कि परमेश्वर से प्राप्त होती है। जिस प्रकार परमेश्वर ने अपने अभिषिक्त पुत्र का सम्मान किया, उसी प्रकार वह उन सभी का भी सम्मान करेगा जो विश्वासयोग्यता के साथ उसकी सेवा करते हैं। नया नियम सिखाता है कि जो विश्वासी अन्त तक मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहते हैं, उन्हें प्रभु की ओर से धार्मिकता का मुकुट, जीवन का मुकुट, अविनाशी मुकुट और कभी न मुरझाने वाला महिमा का मुकुट जैसे अनन्त प्रतिफल प्राप्त होंगे।

जीवन में लागू करें (Application)

तेजस्वी मुकुट हमें सिखाता है कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में सदैव विश्वासयोग्य है। यद्यपि संसार परमेश्वर के

लोगों का विरोध कर सकता है या उन्हें तुच्छ समझ सकता है, फिर भी अन्ततः प्रभु उन्हें सम्मानित करेगा और उनकी सत्यता को प्रकट करेगा। यह मुकुट हमें स्मरण दिलाता है कि सच्ची महिमा, सम्मान और विजय केवल परमेश्वर से प्राप्त होती है। इसलिए प्रत्येक विश्वासी को पवित्रता, विश्वासयोग्यता और आज्ञाकारिता का जीवन जीना चाहिए, इस भरोसे के साथ कि परमेश्वर उचित समय पर उन्हें भी सम्मानित करेगा, जैसे उसने अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह को महिमा प्रदान की।

अन्ततः, तेजस्वी मुकुट हमें प्रभु यीशु मसीह की ओर संकेत करता है, जो राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। उसका राज्य अनन्त है और उसकी महिमा कभी समाप्त नहीं होगी। उसका तेजस्वी मुकुट परमेश्वर की अनन्त सामर्थ्य, विश्वासयोग्यता तथा पाप, मृत्यु और हर शत्रु पर उसकी पूर्ण विजय का प्रमाण है।

आपका हिंदी अनुवाद प्रस्तुत है:

4.***[illegible] (The Crown of Splendor)***

[illegible] 4:9 [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

□□ □□□□□ □□□□ □□□, □□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□, □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ (1 □□□□□□□□□□□ 1:24, 30), □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□, □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□—□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□

□□□□□ □□□□□ □□□□□□

- □□□□□□□ 4:7–9
- □□□□□□□ 3:13–18
- □□□□□ 3:17
- 1 □□□□□□□□□□ 1:24, 30

5.***<u>□□□□□ □□ □□□□□ (The Crown of Knowledge)</u>***

ज्ञान का मुकुट का उल्लेख नीतिवचन 14:18 में मिलता है, जहाँ लिखा है, “भोले लोग मूर्खता के वारिस होते हैं, परन्तु बुद्धिमान ज्ञान का मुकुट धारण करते हैं।“ (नीतिवचन 14:18)। इस नीतिवचन में राजा सुलैमान दो प्रकार के लोगों की तुलना करते हैं—एक ओर वे भोले और सरल लोग हैं जो शिक्षा और सुधार को अस्वीकार करके मूर्खता में बने रहते हैं, और दूसरी ओर वे बुद्धिमान (विवेकी) लोग हैं जो परमेश्वर की बुद्धि को खोजते हैं, उससे सीखते हैं और अपने जीवन में उसे लागू करते हैं। यहाँ ज्ञान का मुकुट किसी वास्तविक मुकुट का नहीं, बल्कि उस सम्मान, गरिमा, विवेक, आत्मिक समझ और परिपक्वता का प्रतीक है जो परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार जीवन जीने से प्राप्त होती है। जो लोग यहोवा का भय मानते हैं, उसके वचन को ग्रहण करते हैं और उसके अनुसार चलते हैं, वे ऐसे ज्ञान से अलंकृत होते हैं जो उनके निर्णयों का मार्गदर्शन करता है, उनके चरित्र को आकार देता है और उन्हें सही तथा गलत में भेद करने की समझ प्रदान करता है। यह ज्ञान उन्हें पाप के जाल से बचाता है और धार्मिकता के मार्ग पर चलने में सहायता करता

□□□ □□□□ □□□□□□, □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□, □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ (□□□□□□□ 1:7) □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□

□□□□□ □□□□□ □□□□□□

- □□□□□□□ 14:18
- □□□□□□□ 1:7
- □□□□□□□ 2:6
- □□□□□□□□□□ 2:2–3
- □□□□□ 1:5

6.***<u>□□ □□ □□□□□ (The Crown of Wealth)</u>***

□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ 14:24 □□□ □□□□□ □□, □□□□ □□□□ □□, “□□□□□□□□□□ □□ □□

सिखाता है कि स्थायी समृद्धि का आधार परमेश्वर की बुद्धि, विश्वासयोग्य जीवन, ईमानदारी और उसकी आज्ञाकारिता है, न कि स्वार्थ, लालच या बेईमानी से प्राप्त धन। सबसे बड़ा धन परमेश्वर को जानना, अपनी संपत्ति और संसाधनों से उसका आदर करना तथा उसकी दी हुई आशीषों का उपयोग उसकी महिमा और दूसरों की भलाई के लिए करना है।

मुख्य बाइबल संदर्भ

- नीतिवचन 14:24

- नीतिवचन 3:9–10

- नीतिवचन 10:22

- मत्ती 6:19–21

- 1 तीमुथियुस 6:17–19

7. सफेद बालों का मुकुट ( महिमा का मुकुट )

सफेद बालों का मुकुट का उल्लेख नीतिवचन 16:31 में मिलता है, जहाँ लिखा है, “पके हुए

बाल शोभायमान मुकुट हैं; वे धार्मिकता के मार्ग पर चलने से प्राप्त होते हैं।“ इस नीतिवचन में राजा सुलैमान सिखाते हैं कि सफेद या पके हुए बाल केवल बढ़ती आयु का चिन्ह नहीं हैं, बल्कि वे सम्मान, बुद्धि, गरिमा और परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य जीवन का प्रतीक हैं। बाइबल के समय में वृद्धावस्था को परमेश्वर की आशीष माना जाता था, क्योंकि यह उसके अनुग्रह, संरक्षण और वर्षों के अनुभव का प्रमाण थी। सफेद बालों का मुकुट ऐसे जीवन का प्रतीक है जो धार्मिकता, सत्यनिष्ठा, धैर्य, आत्मिक परिपक्वता और परमेश्वर के भय में व्यतीत किया गया हो। यह विश्वासियों को स्मरण दिलाता है कि सच्ची सुंदरता बाहरी रूप में नहीं, बल्कि उस जीवन में है जो परमेश्वर का आदर करता है और उसकी बुद्धि को प्रकट करता है।

यह वचन यह भी स्पष्ट करता है कि सफेद बाल तभी महिमा का मुकुट बनते हैं जब वे धार्मिक जीवन के साथ जुड़े हों। केवल अधिक आयु प्राप्त करना इस मुकुट का उद्देश्य नहीं है, बल्कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पवित्र और

धर्मी जीवन जीना ही वास्तविक सम्मान का कारण है। जो व्यक्ति अपने जीवनभर परमेश्वर के मार्ग पर चलता है, उसका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए विश्वास, धैर्य और परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की जीवित गवाही बन जाता है। इसलिए सफेद बालों का मुकुट हर विश्वासी को प्रोत्साहित करता है कि वह जीवन के प्रत्येक चरण में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बना रहे, क्योंकि धार्मिक जीवन ही वह महिमा है जो परमेश्वर और मनुष्यों दोनों के सामने सच्चा सम्मान दिलाती है।

मुख्य बाइबल संदर्भ

- नीतिवचन 16:31

- लैव्यव्यवस्था 19:32

- भजन संहिता 92:12–15

- यशायाह 46:4

- 2 तीमुथियुस 4:7–8

***8.□□□□-□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□***
(Grandchildren as a Crown)

□□□□□ □□□□□□

□□□□□ □□□□-□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□ 17:6 □□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□□, □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□, □□□□□□, □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□, □□□□□, □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ “□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□,” □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□-□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□

□□□□-□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□-□□-□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□

प्रमाण हैं कि परमेश्वर की आशीष केवल एक पीढ़ी तक सीमित नहीं रहती, बल्कि आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचती है। वे वृद्धों के लिए आनंद, संतोष और गर्व का कारण बनते हैं तथा उन्हें यह स्मरण दिलाते हैं कि उनका विश्वास, उनके मूल्य और उनकी बुद्धि आने वाली पीढ़ियों तक पहुँच रही है।

इसी प्रकार, इस पद का दूसरा भाग बताता है कि माता-पिता अपने बच्चों के लिए गौरव का कारण होते हैं। जब माता-पिता परमेश्वर का भय मानते हुए अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं और उन्हें धर्मी जीवन का उदाहरण देते हैं, तब बच्चे अपने माता-पिता पर गर्व करते हैं। यह पद परिवार के भीतर परस्पर सम्मान, प्रेम और आशीष के परमेश्वर द्वारा स्थापित सिद्धांत को प्रकट करता है।

प्राचीन इस्राएल की संस्कृति में अपने पोते- पोतियों को देख पाना परमेश्वर की विशेष कृपा और आशीष का चिन्ह माना जाता था। यह एक ऐसे जीवन का प्रमाण था जो परमेश्वर की भलाई, सुरक्षा और विश्वासयोग्यता के अधीन बीता

हो। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में परमेश्वर अपने लोगों को आज्ञा देता है कि वे उसके वचन और उसकी आज्ञाओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाएँ, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी उसकी आराधना करें और उसके मार्गों पर चलें।

मुख्य बाइबल पद

नीतिवचन 17:6 (NIV)

•“बच्चों के बच्चे वृद्धों का मुकुट
हैं, और बच्चों का गौरव उनके माता-पिता हैं।“

यह पद हमें स्मरण दिलाता है कि परिवार परमेश्वर की सबसे अनमोल देनों में से एक है। पोते-पोतियाँ केवल परिवार की अगली पीढ़ी नहीं हैं, बल्कि वे परमेश्वर की निरंतर आशीष और विश्वासयोग्यता के जीवित प्रमाण हैं। उसी प्रकार, धर्मी और विश्वासयोग्य माता-

पिता अपने बच्चों के लिए सम्मान और प्रेरणा का स्रोत बनते हैं।

जीवन में लागू करें (Application)

पोते-पोतियों का मुकुट हमें सिखाता है कि परमेश्वर की आशीष एक पीढ़ी तक सीमित नहीं रहती, बल्कि आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचती है। माता-पिता और दादा-दादी का यह उत्तरदायित्व है कि वे अपने विश्वास, परमेश्वर के वचन, अपनी बुद्धि और अपने जीवन के उदाहरण को अगली पीढ़ी तक पहुँचाएँ। एक आत्मिक विरासत किसी भी भौतिक संपत्ति से कहीं अधिक मूल्यवान होती है, क्योंकि वह आने वाली पीढ़ियों को प्रभु को जानने और उसकी सेवा करने के लिए प्रेरित करती है।

यह प्रतीकात्मक मुकुट हमें ऐसे परिवार बनाने के लिए भी प्रोत्साहित करता है जो परमेश्वर के वचन पर आधारित हों, जहाँ प्रेम, सम्मान, विश्वास और आज्ञाकारिता का वातावरण हो। जब परिवार की प्रत्येक पीढ़ी प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य रहती है, तब पूरा परिवार परमेश्वर की कृपा और विश्वासयोग्यता का जीवित साक्षी बन जाता है।

□□□□□, “□□□□-□□□□□□□ □□ □□□□□” □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□, □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ —□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□, □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□

## ***9.□□□□□□□ □□□□□ (The Glorious Crown)***

□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ 28:5 □□□ □□□□□ □□, □□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□, □□, □□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ “□□□□□ □□ □□□□□” □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□, □□□□□□□ □□ □□□, □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□

इसके विपरीत, परमेश्वर अपने विश्वासयोग्य लोगों के लिए एक अद्भुत प्रतिज्ञा करता है। वह घोषणा करता है कि वह स्वयं अपने लोगों के लिए महिमामय मुकुट और शोभायुक्त मुकुट होगा। संसार की महिमा, प्रतिष्ठा और सम्मान कुछ समय के लिए होते हैं और अंततः समाप्त हो जाते हैं, परन्तु परमेश्वर की महिमा अनन्त, पूर्ण और कभी न समाप्त होने वाली है। वही अपने लोगों के लिए सम्मान, शोभा, धार्मिकता, बुद्धि और सामर्थ्य का स्रोत है।

इस प्रकार महिमामय मुकुट किसी भौतिक मुकुट का प्रतीक नहीं है जो विश्वासियों को पहनाया जाएगा, बल्कि यह स्वयं परमेश्वर का प्रतीक है, जो अपने लोगों का सम्मान, शोभा, सुरक्षा और अनन्त महिमा बन जाता है। अनेक मसीही विद्वान इस भविष्यवाणी को प्रभु यीशु मसीह की ओर भी संकेत मानते हैं, जो प्रतिज्ञा किए हुए मसीहा हैं और जिन्होंने परमेश्वर की महिमा को पूर्ण रूप से प्रकट किया। वे ही अनन्त राजा हैं, जिनका राज्य कभी समाप्त नहीं होगा।

मुख्य बाइबल पद

यशायाह 28:5 (NIV)

•“उस दिन सेनाओं का यहोवा अपनी प्रजा के बचे हुए लोगों के लिए महिमामय मुकुट और शोभायुक्त मुकुट होगा।“

यह पद हमें स्मरण दिलाता है कि संसार की उपलब्धियाँ, धन-दौलत, पद और प्रतिष्ठा एक दिन समाप्त हो जाएँगे, परन्तु परमेश्वर की महिमा कभी समाप्त नहीं होगी। जो लोग उस पर भरोसा रखते हैं, उनके लिए परमेश्वर स्वयं उनका सम्मान, उनकी शोभा और उनका सबसे बड़ा प्रतिफल बन जाता है।

अगले पद (यशायाह 28:6) में परमेश्वर यह भी प्रतिज्ञा करता है कि वह अपने लोगों को न्याय करने की बुद्धि और युद्ध करने की सामर्थ्य प्रदान करेगा। इससे स्पष्ट होता है कि परमेश्वर केवल सम्मान ही नहीं देता, बल्कि अपने लोगों को अपनी इच्छा पूरी करने के लिए सामर्थ्य और बुद्धि भी प्रदान करता है।

जीवन में लागू करें (Application)

□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□, □□, □□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□, □□□□□ □□□□□, □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□

□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□-□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□, □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□

□□□□□, □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□, □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□-□□□□□□ □□□ □□□□□□

***10.□□□□□□ □□□□□ (The Beautiful Crown)***

सुन्दर मुकुट का उल्लेख यहेजकेल 16:12 में मिलता है, जहाँ परमेश्वर भविष्यद्वक्ता यहेजकेल के द्वारा एक रूपक (Allegory) का उपयोग करते हुए यरूशलेम के साथ अपने संबंध को चित्रित करता है। इस अध्याय में यरूशलेम को एक ऐसी त्यागी हुई बालिका के रूप में दिखाया गया है, जिसे परमेश्वर ने पाया, बचाया, उसका पालन-पोषण किया और प्रेमपूर्वक बड़ा किया। जब वह बड़ी हुई, तब परमेश्वर ने उसके साथ वाचा बाँधी, उसे अपना बनाया और उसे उत्तम वस्त्रों, बहुमूल्य आभूषणों तथा राजसी अलंकारों से सुसज्जित किया। इन्हीं उपहारों में से एक था उसके सिर पर रखा गया सुन्दर मुकुट, जो सर्वोच्च सम्मान, राजसी गरिमा और परमेश्वर के विशेष अनुग्रह का प्रतीक था।

यह सुन्दर मुकुट यरूशलेम ने अपने परिश्रम या योग्यता से प्राप्त नहीं किया था, बल्कि यह पूरी तरह परमेश्वर के अनुग्रह का उपहार था। यह उसके प्रेम, विश्वासयोग्यता और अपनी प्रजा के साथ की गई वाचा का प्रमाण था। परमेश्वर ने एक असहाय और तिरस्कृत बालिका को

उठाकर उसे रानी के समान सम्मानित किया। इस प्रकार उसने दिखाया कि उसकी सारी शोभा, महिमा और सम्मान परमेश्वर से ही प्राप्त हुए थे। यह मुकुट परमेश्वर की आशीष, उसकी उपस्थिति और उसके चुने हुए लोगों को दिए गए विशेष स्थान का प्रतीक था।

मुख्य बाइबल पद

यहेजकेल 16:12 (NIV)

•“मैंने तेरी नाक में नथ, तेरे कानों में बालियाँ और तेरे सिर पर एक सुन्दर
मुकुट रखा।“

यह पद परमेश्वर के महान प्रेम और उसकी उदारता को प्रकट करता है। उसने अपनी प्रजा को केवल आवश्यक वस्तुएँ ही नहीं दीं, बल्कि उन्हें सम्मान, सौन्दर्य और राजसी गरिमा भी प्रदान की। प्रत्येक आभूषण उसकी देखभाल, प्रबन्ध और वाचा की विश्वासयोग्यता का प्रतीक था, और सुन्दर मुकुट उन सबमें सर्वोच्च सम्मान का चिन्ह था।

किन्तु आगे के पदों में एक दुखद परिवर्तन दिखाई देता है। यरूशलेम अपनी सुंदरता और

सम्मान पर घमण्ड करने लगी और यह भूल गई कि जो कुछ उसके पास था, वह सब परमेश्वर की देन था। उसने अपने सौन्दर्य पर भरोसा किया, परमेश्वर पर नहीं, और परिणामस्वरूप वह आत्मिक अविश्वास और मूर्तिपूजा में गिर गई। यह हमें गंभीर चेतावनी देता है कि परमेश्वर की आशीषों का उद्देश्य हमें अभिमानी बनाना नहीं, बल्कि उसके प्रति और अधिक कृतज्ञ, नम्र और विश्वासयोग्य बनाना है।

सुन्दर मुकुट हमें स्मरण दिलाता है कि हमारे जीवन की हर आशीष, हर प्रतिभा, हर अवसर और हर सम्मान परमेश्वर के अनुग्रह का परिणाम है। हमारी पहचान हमारी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि परमेश्वर के साथ हमारे संबंध में है। जिस प्रकार परमेश्वर ने यरूशलेम को सम्मान और शोभा से विभूषित किया, उसी प्रकार आज वह प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अपने लोगों को धार्मिकता, अनुग्रह और प्रेम से अलंकृत करता है।

जीवन में लागू करें (Application)

## ***11.□□□□□□□ □□□□□ (The Imperishable Crown )***

□□□□□ □□□□□□

□□□□□□□ □□□□□ (□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ Incorruptible Crown □□ □□□ □□□□ □□) □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ 1 □□□□□□□□□□□ 9:25 □□□ □□□□□ □□, □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□, □□ □□□□□□□□ □□□□□ (Isthmian Games) □□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□, □□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□

प्राचीन खेल प्रतियोगिताओं में खिलाड़ी कई महीनों तक कठिन अभ्यास और कठोर आत्म-संयम का पालन करते थे, ताकि वे “स्टीफानोस (Stephanos)” अर्थात् विजय का मुकुट प्राप्त कर सकें। यह मुकुट जैतून, चीड़ या बेल की डालियों से बनाया जाता था। यद्यपि यह मुकुट सम्मान और विजय का प्रतीक था, फिर भी कुछ ही समय में वह मुरझा जाता था और उसका सौन्दर्य समाप्त हो जाता था। प्रेरित पौलुस इस नाशवान मुकुट की तुलना उस अविनाशी मुकुट से करते हैं, जिसे परमेश्वर अपने विश्वासयोग्य लोगों के लिए तैयार किए हुए है। जहाँ खिलाड़ी एक नाशवान मुकुट पाने के लिए इतना परिश्रम करते हैं, वहीं विश्वासी उस अनन्त और कभी न मुरझाने वाले मुकुट की आशा में जीवन व्यतीत करते हैं।

अविनाशी मुकुट उस अनन्त प्रतिफल का प्रतीक है, जो परमेश्वर उन विश्वासियों को देगा जो अनुशासन, विश्वासयोग्यता, आत्म-संयम और आज्ञाकारिता के साथ मसीह का अनुसरण करते हैं। यह मुकुट आत्मिक विजय, धैर्य, दृढ़ता और परमेश्वर के प्रति अटल समर्पण का चिन्ह है।

जिस प्रकार खिलाड़ी अस्थायी सुखों का त्याग करके विजय प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार विश्वासियों को भी सांसारिक इच्छाओं और पापमय लालसाओं का त्याग करके परमेश्वर के राज्य पर अपना ध्यान केन्द्रित रखना चाहिए।

मुख्य बाइबल पद

1 कुरिन्थियों 9:25 (NIV)

•“हर खिलाड़ी सब बातों में आत्म-संयम रखता है। वे तो ऐसा इसलिए करते हैं कि
ऐसा मुकुट प्राप्त करें जो नष्ट हो
जाता है, परन्तु हम ऐसा मुकुट पाने के
लिए जो कभी नष्ट नहीं होगा।“

यह पद हमें सिखाता है कि मसीही जीवन उद्देश्यहीन नहीं है, बल्कि एक ऐसी आत्मिक दौड़ है जिसे विश्वास, अनुशासन और धैर्य के साथ पूरा करना है। हमारा लक्ष्य संसार की अस्थायी प्रशंसा या सम्मान नहीं, बल्कि वह अनन्त प्रतिफल है जिसे प्रभु यीशु मसीह अपने विश्वासयोग्य सेवकों को देंगे।

जीवन में लागू करें (Application)

अविनाशी मुकुट हमें सिखाता है कि हमें अपने आत्मिक जीवन को गंभीरता से लेना चाहिए। जैसे

खिलाड़ी विजय प्राप्त करने के लिए कठोर अभ्यास और आत्म-संयम का पालन करते हैं, वैसे ही प्रत्येक विश्वासी को प्रार्थना, परमेश्वर के वचन का अध्ययन, पवित्र जीवन और आज्ञाकारिता में बढ़ना चाहिए।

यह मुकुट हमें याद दिलाता है कि संसार के सुख, सम्मान और उपलब्धियाँ अस्थायी हैं, परन्तु परमेश्वर द्वारा दिया जाने वाला प्रतिफल अनन्त है। इसलिए हमें क्षणिक सुखों के पीछे भागने के बजाय अपने जीवन को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीना चाहिए और अन्त तक विश्वासयोग्य बने रहना चाहिए।

अन्ततः, अविनाशी मुकुट हमें प्रभु यीशु मसीह की ओर दृष्टि रखने के लिए प्रेरित करता है। वही हमारी आत्मिक दौड़ का लक्ष्य और हमारी शक्ति का स्रोत हैं। जब हम विश्वास, धैर्य और आत्म-संयम के साथ अपने जीवन की दौड़ पूरी करेंगे, तब प्रभु हमें वह अविनाशी मुकुट प्रदान करेंगे, जिसकी महिमा कभी समाप्त नहीं होगी और जो सदा-सर्वदा बना रहेगा।

## ***12.□□□□□□ □□ □□□□□ (The Victor's Crown)***

□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ 2 □□□□□□□□□ 2:5 □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□, □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□, □□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□

□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□, □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □ □□, □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ (Stephanos)

प्राप्त करता था, जिसने नियमों का पालन करते हुए ईमानदारी और धैर्य के साथ प्रतियोगिता पूरी की हो। यह मुकुट विजय, सम्मान और उपलब्धि का प्रतीक था।

प्रेरित पौलुस इसी उदाहरण के द्वारा मसीही जीवन की एक महत्वपूर्ण सच्चाई सिखाते हैं। परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग केवल विश्वास का आरम्भ ही न करें, बल्कि अन्त तक विश्वासयोग्य और आज्ञाकारी बने रहें। मसीही जीवन मनुष्य की इच्छाओं या संसार के सिद्धान्तों के अनुसार नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन के अनुसार जीया जाना चाहिए। विजेता का मुकुट हमें स्मरण दिलाता है कि सच्ची आत्मिक विजय केवल उसी को प्राप्त होती है जो प्रभु यीशु मसीह के प्रति विश्वासयोग्य रहता है और उसके वचन के अनुसार जीवन व्यतीत करता है।

मुख्य बाइबल पद

2 तीमुथियुस 2:5 (NIV)

•“इसी प्रकार यदि कोई खिलाड़ी प्रतियोगिता में भाग लेता है, तो वह तब

तक विजेता का मुकुट प्राप्त नहीं करता
जब तक कि वह नियमों के अनुसार प्रतियोगिता न करे।“

यह पद हमें सिखाता है कि परमेश्वर अपने प्रतिफल उन्हें देता है जो उसके वचन के अनुसार विश्वासयोग्यता और आज्ञाकारिता के साथ जीवन जीते हैं। जैसे खिलाड़ी नियमों का पालन करके ही विजय प्राप्त करता है, वैसे ही विश्वासी को भी परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलना आवश्यक है।

जीवन में लागू करें (Application)

विजेता का मुकुट हमें अपने मसीही जीवन की जाँच करने के लिए प्रेरित करता है। परमेश्वर केवल हमारी बाहरी उपलब्धियों को नहीं, बल्कि हमारे हृदय की विश्वासयोग्यता, पवित्रता और आज्ञाकारिता को देखता है। वह चाहता है कि हम हर परिस्थिति में उसके वचन के अनुसार जीवन जिएँ, परीक्षाओं में धैर्य रखें और अन्त तक विश्वास में दृढ़ बने रहें।

यह मुकुट हमें स्मरण दिलाता है कि मसीही जीवन दूसरों से प्रतिस्पर्धा करने का नहीं,

□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□, □□ □□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□, □□ □□□□□ □□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□

## ***13.□□□□□□□□□ □□ □□□□□ (The Crown of Righteousness)***

□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ 2 □□□□□□□□□ 4:8 □□□ □□□□□ □□, □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□, □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ “□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□, □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□, □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□” (2 □□□□□□□□□ 4:7) □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□

रखा हुआ है, जिसे प्रभु उन्हें उस दिन प्रदान करेंगे।

धार्मिकता का मुकुट उस अनन्त प्रतिफल का प्रतीक है, जिसे परमेश्वर उन लोगों को देगा जो जीवन के अन्त तक उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहते हैं और प्रभु यीशु मसीह के पुनः आगमन की उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं। यह मुकुट मनुष्य के अपने अच्छे कार्यों या व्यक्तिगत धार्मिकता के कारण नहीं मिलता, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह से उन विश्वासियों को दिया जाता है जिन्होंने प्रभु यीशु पर विश्वास किया, उसके वचन के अनुसार जीवन व्यतीत किया और अन्त तक विश्वासयोग्य बने रहे।

प्रेरित पौलुस यह भी स्पष्ट करते हैं कि यह प्रतिफल केवल प्रेरितों, पास्टरों या कलीसिया के अगुवों के लिए ही नहीं है, बल्कि उन सभी विश्वासियों के लिए है जो प्रभु यीशु के प्रकट होने से प्रेम रखते हैं और उसकी प्रतीक्षा करते हैं। यह मुकुट उन लोगों के लिए है जो अपने जीवन का केन्द्र मसीह को

बनाते हैं और उसकी इच्छा के अनुसार जीवन जीते हैं।

संसार के राजा, खिलाड़ी या विजेता जो मुकुट प्राप्त करते हैं, वे कुछ समय बाद नष्ट हो जाते हैं। परन्तु धार्मिकता का मुकुट अनन्त है। यह परमेश्वर की स्वीकृति, विश्वासयोग्य जीवन की पूर्णता और उसके अनन्त राज्य में प्रवेश के आनन्द का प्रतीक है। जब प्रभु यीशु मसीह पुनः आएँगे, तब वे धर्मी न्यायी के रूप में प्रत्येक विश्वासी को उसके विश्वासयोग्य जीवन के अनुसार प्रतिफल देंगे। उनका न्याय पूर्ण, निष्पक्ष और सत्य पर आधारित होगा।

मुख्य बाइबल पद

2 तीमुथियुस 4:8 (NIV)

•“अब मेरे लिये धार्मिकता का वह मुकुट
रखा हुआ है, जिसे उस दिन प्रभु, जो धर्मी

न्यायी है, मुझे देगा; और केवल मुझे ही नहीं, बल्कि उन सब को भी जो उसके प्रकट
होने से प्रेम रखते हैं।“

यह पद हमें स्मरण दिलाता है कि हमारी आशा इस संसार के सम्मान, धन या उपलब्धियों में नहीं, बल्कि उस अनन्त प्रतिफल में है जिसे प्रभु यीशु अपने विश्वासयोग्य लोगों के लिए तैयार किए हुए हैं। परमेश्वर हमारी प्रत्येक आज्ञाकारिता, प्रत्येक बलिदान और प्रत्येक विश्वासयोग्य सेवा को देखता है, और उचित समय पर उसका प्रतिफल अवश्य देगा।

“धर्मी न्यायी” की उपाधि हमें यह विश्वास दिलाती है कि प्रभु यीशु का न्याय पूर्णतः निष्पक्ष और धर्मी है। मनुष्य बाहरी रूप को देखता है, परन्तु प्रभु हृदय को देखता है। इसलिए विश्वासी निश्चिन्त होकर उसकी सेवा कर सकते हैं, क्योंकि उनकी मेहनत और विश्वासयोग्यता प्रभु की दृष्टि में कभी व्यर्थ नहीं जाती।

जीवन में लागू करें (Application)

धार्मिकता का मुकुट हमें प्रोत्साहित करता है कि हम अपने मसीही जीवन में अन्त तक विश्वासयोग्य बने रहें, चाहे हमें परीक्षाओं, विरोध या कष्टों का सामना ही क्यों न करना पड़े। प्रेरित पौलुस की तरह हमें भी विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़नी है, अपनी आत्मिक दौड़ को धैर्यपूर्वक पूरी करनी है और अन्त तक विश्वास की रक्षा करनी है।

यह मुकुट हमें प्रतिदिन प्रभु यीशु के पुनः आगमन की आशा में जीने की प्रेरणा देता है। जो लोग वास्तव में प्रभु से प्रेम करते हैं, वे उसके आने की प्रतीक्षा करते हैं और ऐसा जीवन जीते हैं जो उसे प्रसन्न करे। इसलिए हमें संसार की क्षणिक वस्तुओं और अस्थायी सफलताओं में उलझने के बजाय अपनी दृष्टि अनन्त जीवन और परमेश्वर के राज्य पर लगाए रखनी चाहिए।

[illegible]

## ***14.[illegible] (The Crown of Life)***

[illegible] 1:12 [illegible] 2:10 [illegible]

सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में परमेश्वर अपने लोगों से कभी यह प्रतिज्ञा नहीं करता कि उनका जीवन परीक्षाओं और कष्टों से रहित होगा। इसके विपरीत, वह अपने बच्चों को हर परिस्थिति में विश्वासयोग्य बने रहने के लिए बुलाता है। परमेश्वर परीक्षाओं को हमारे विश्वास को नष्ट करने के लिए नहीं, बल्कि उसे शुद्ध, दृढ़ और परिपक्व बनाने के लिए होने देता है। जैसे सोना आग में तपाकर शुद्ध किया जाता है, वैसे ही विश्वासियों का विश्वास भी परीक्षाओं के द्वारा शुद्ध और दृढ़ किया जाता है। जो लोग कठिनाइयों के बीच भी प्रभु पर भरोसा रखते हैं, उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और उससे प्रेम करते रहते हैं, वे यह सिद्ध करते हैं कि उनका विश्वास सच्चा है।

याकूब घोषणा करता है कि जो मनुष्य परीक्षा में धीरज धरता है, वह धन्य है, क्योंकि परीक्षा में खरा उतरने के बाद वह जीवन का मुकुट प्राप्त करेगा, जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम रखने वालों से की है। यह

मुकुट मनुष्य के अपने कार्यों या धार्मिकता से प्राप्त नहीं होता, बल्कि यह परमेश्वर के अनुग्रह का प्रतिफल है, जो उन लोगों के लिए सुरक्षित रखा गया है जो अन्त तक विश्वास में स्थिर बने रहते हैं।

प्रभु यीशु मसीह भी स्मुर्ना की कलीसिया को दिए गए अपने संदेश में इस मुकुट का उल्लेख करते हैं। वहाँ के विश्वासी अपने विश्वास के कारण कठोर सताव, कैद और यहाँ तक कि शहादत का सामना करने वाले थे। फिर भी प्रभु ने उन्हें कष्टों से बचाने का नहीं, बल्कि उनमें स्थिर रहने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा, “मत डर... मृत्यु तक भी विश्वासयोग्य रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा।“ प्रभु ने उन्हें यह प्रतिज्ञा दी कि यदि वे अपने प्राणों की कीमत पर भी उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहेंगे, तो वे जीवन का मुकुट प्राप्त करेंगे। यह मुकुट इस बात की घोषणा करता है कि जो मसीह में हैं, उनके ऊपर मृत्यु की कोई विजय नहीं, क्योंकि वे उसके अनन्त राज्य में अनन्त जीवन के सहभागी होंगे।

इन दोनों पदों में यूनानी शब्द “स्टीफानोस (Stephanos)” का प्रयोग हुआ है, जो उस विजय-मुकुट के लिए प्रयोग किया जाता था जो प्रतियोगिता में विजयी होने वाले खिलाड़ियों को दिया जाता था। किन्तु संसार का वह मुकुट कुछ ही समय में मुरझा जाता था, जबकि जीवन का मुकुट अविनाशी, अमर और कभी न मुरझाने वाला है। यह उन लोगों का प्रतिफल है जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह से विश्वास में बने रहकर संसार, पाप, दुःख और मृत्यु पर विजय प्राप्त की है।

मुख्य बाइबल पद

याकूब 1:12 (NIV)

•“धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि परीक्षा में
खरा उतरने पर वह जीवन का वह मुकुट
प्राप्त करेगा जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु
ने अपने प्रेम रखने वालों से की है।“

प्रकाशितवाक्य 2:10 (NIV)

•“जो दुःख तुझे उठाना पड़ेगा उससे मत
डर... मृत्यु तक भी विश्वासयोग्य रह, और
मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा।“

ये प्रतिज्ञाएँ हमें स्मरण दिलाती हैं कि प्रभु हमारे प्रत्येक आँसू, प्रत्येक परीक्षा, प्रत्येक संघर्ष और उसके नाम के लिए उठाए गए प्रत्येक दुःख को देखता है। वह अपने विश्वासयोग्य लोगों को कभी नहीं भूलता, बल्कि उचित समय पर उन्हें अपना अनन्त प्रतिफल प्रदान करेगा।

जीवन में लागू करें (Application)

जीवन का मुकुट प्रत्येक विश्वासी को बुलाता है कि वह विश्वास में दृढ़, आशा में अटल और प्रभु यीशु मसीह के प्रति प्रेम में स्थिर बना रहे। चाहे हमें परीक्षाओं, प्रलोभनों, अस्वीकृति, सताव या मृत्यु का सामना ही क्यों न करना पड़े, हमें हियाव नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि हमारा प्रभु विश्वासयोग्य है और उसकी प्रतिज्ञाएँ कभी असफल नहीं होतीं।

□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□, □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□, □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□, □□□□□ □□□, □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□

□□□□□ □□ □□□ □ □□□□□□□ □□□□ 15.***<u>□□□□□ (The Unfading Crown of Glory)</u>***

□□□□□ □□ □□□ □ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ 1 □□□□ 5:2–4 □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□, □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□

प्रेरित पतरस, जो स्वयं एक प्राचीन (एल्डर) और मसीह के दुःखों का प्रत्यक्ष गवाह था, कलीसिया के प्राचीनों को गंभीरतापूर्वक यह आज्ञा देता है कि वे “परमेश्वर के उस झुंड की चरवाही करो जो तुम्हारे बीच में है।“ स्वयं प्रभु यीशु ने भी पतरस को यह दायित्व सौंपा था, जब उन्होंने कहा था, “मेरे मेमनों को चराना... मेरी भेड़ों की रखवाली करना... मेरी भेड़ों को चराना” (यूहन्ना 21:15–17)। इसलिए पतरस उसी आज्ञा को आगे बढ़ाते हुए कहता है कि अगुवे अपनी सेवा मजबूरी से नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार स्वेच्छा से; लोभ के कारण नहीं, बल्कि तत्पर मन से; और प्रभुत्व जताने के लिए नहीं, बल्कि झुंड के लिए आदर्श बनकर करें।

कलीसिया किसी मनुष्य की नहीं, बल्कि प्रभु यीशु मसीह की है। उसने उसे अपने बहुमूल्य लहू से मोल लिया है (प्रेरितों के काम 20:28)। इसलिए प्रत्येक पास्टर, प्राचीन और आत्मिक अगुवा केवल अधीन चरवाहा (Under-shepherd) है, जबकि प्रभु यीशु ही प्रधान

चरवाहा (Chief Shepherd) हैं। प्रत्येक सेवक एक दिन उनके सामने खड़ा होकर अपनी सेवा का लेखा देगा।

पतरस यह महान प्रतिज्ञा करता है कि “जब प्रधान चरवाहा प्रगट होगा,” तब जो लोग विश्वासयोग्यता से अपनी सेवकाई पूरी करेंगे, वे “महिमा का वह मुकुट प्राप्त करेंगे जो कभी मुरझाने का नहीं।“ यह मुकुट किसी पद, उपाधि, प्रसिद्धि या मानवीय प्रशंसा के कारण नहीं दिया जाएगा, बल्कि विश्वासयोग्य सेवकाई, आत्म-बलिदान, नम्र नेतृत्व, पवित्र जीवन और परमेश्वर की प्रजा के प्रति प्रेमपूर्ण देखभाल के कारण प्रदान किया जाएगा।

“कभी न मुरझाने वाला” शब्द हमें स्मरण कराता है कि इस संसार के सभी सम्मान और महिमा क्षणभंगुर हैं। राजाओं के मुकुट नष्ट हो जाते हैं, विजेताओं के पुष्पहार मुरझा जाते हैं और मनुष्यों की प्रशंसा शीघ्र समाप्त हो जाती है। परन्तु जो प्रतिफल प्रभु यीशु अपने विश्वासयोग्य सेवकों को देंगे, वह अविनाशी,

अमर और सदा रहने वाला होगा। उसकी महिमा कभी कम नहीं होगी, क्योंकि वह परमेश्वर के अनन्त राज्य से प्राप्त होने वाली महिमा है।

मुख्य बाइबल पद

1 पतरस 5:2–4 (NIV)

•“परमेश्वर के उस झुंड की चरवाही करो जो तुम्हारे बीच में है, उसकी देखभाल करो—
न मजबूरी से, परन्तु स्वेच्छा से, जैसा परमेश्वर चाहता है; नीच लाभ के लिए
नहीं, बल्कि उत्सुकता से; और उन लोगों
पर प्रभुत्व न जताओ जो तुम्हें सौंपे
गए हैं, परन्तु झुंड के लिए आदर्श बनो। और जब प्रधान चरवाहा प्रगट होगा, तब तुम महिमा का वह मुकुट प्राप्त करोगे जो कभी मुरझाने का नहीं।“

यह पद हमें सिखाता है कि परमेश्वर अपने सेवकों का मूल्यांकन संसार की दृष्टि से नहीं, बल्कि उनकी विश्वासयोग्यता, नम्रता, पवित्रता और प्रेमपूर्ण सेवा के आधार पर करता है। प्रभु के लिए किया गया प्रत्येक कार्य, चाहे वह मनुष्यों की दृष्टि में छोटा ही क्यों न हो, उसकी दृष्टि में स्मरण रखा जाता है और उचित समय पर उसका प्रतिफल दिया जाएगा।

यद्यपि यह प्रतिज्ञा विशेष रूप से कलीसिया के प्राचीनों और चरवाहों के लिए दी गई है, तथापि इसका सिद्धान्त उन सभी विश्वासियों पर भी लागू होता है जो प्रभु की प्रजा को शिक्षा देते हैं, शिष्य बनाते हैं, निर्बलों को सम्भालते हैं, दुःखियों को सांत्वना देते हैं और भले चरवाहे के समान प्रेमपूर्वक सेवा करते हैं।

जीवन में लागू करें (Application)

महिमा का कभी न मुरझाने वाला मुकुट प्रत्येक विश्वासी सेवक को यह स्मरण कराता है कि सेवकाई सम्मान प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि परमेश्वर द्वारा सौंपा गया एक पवित्र उत्तरदायित्व है। इसलिए हमें मनुष्यों को प्रसन्न करने के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य पाए जाने के लिए सेवा करनी चाहिए।

यह मुकुट हमारी दृष्टि को प्रधान चरवाहे, प्रभु यीशु मसीह के महिमामय आगमन की ओर लगाता है। जिस दिन वह प्रगट होंगे, उस दिन प्रत्येक विश्वासयोग्य सेवक उनकी ओर से प्रशंसा और अनन्त प्रतिफल प्राप्त करेगा। इसलिए हमें नम्रता, पवित्रता, प्रेम और धैर्य के साथ अपनी सेवकाई पूरी करनी चाहिए, यह जानते हुए कि हमारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है (1 कुरिन्थियों 15:58)।

अन्ततः, महिमा का कभी न मुरझाने वाला मुकुट हमारी दृष्टि प्रभु यीशु मसीह, अर्थात् प्रधान चरवाहे, की ओर ले जाता है, जिसने अपनी भेड़ों के लिए अपना प्राण दे दिया, मृत्यु पर

जय पाई, और अब राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु होकर सदा सर्वदा राज्य करता है। जो उसके प्रति विश्वासयोग्य रहकर उसकी प्रजा की सेवा करेंगे, वे एक दिन उसके ही हाथों से महिमा का वह मुकुट प्राप्त करेंगे जो कभी मुरझाने का नहीं, और युगानुयुग उसकी महिमा में आनन्दित होंगे।

अन्ततः, जीवन का मुकुट प्रत्येक विश्वासी की उस धन्य आशा की ओर संकेत करता है कि जो लोग अन्त तक विश्वासयोग्य बने रहेंगे, वे सदा के लिए प्रभु की उपस्थिति में निवास करेंगे, जहाँ न मृत्यु होगी, न शोक, न रोना, न पीड़ा, बल्कि वे युगानुयुग अपने उद्धारकर्ता के साथ आनन्द और महिमा में राज्य करेंगे।